कसायपाहुडं भाग-3 (फोल्डर नं. 001409)

मुख्य टाइटल
प्रकाशककी ओर से ---5
चित्र परिचय---7
विषयसूची --9
1. मंगलाचरण ---1
2. स्थितिविभक्ति के दो भेद ---2
3. स्थितिविभक्ति की सार्थकता --2
4. स्थितिविभक्तिके दो भेदों का सयुक्तिक निर्देश --2-3
5. मूल प्रकृतिस्थितिका विशेष ऊहापोह--3-4
6. स्थितिविभक्तिका अर्थपद --5
7. मूल प्रकृतिस्थितिमें विभक्ति पदकी सार्थकता--5-6
8. उत्तर प्रकृतिस्थितिमें विभक्ति पदकी सार्थकता ---6-7
9. मूल प्रकृतिस्थितिविभक्तिके अनुयोगद्वार --7-8
10.ये ही अनुयोगद्वार उत्तर प्रकृतिस्थिति विभक्तिमें भी लागू होते हैं---------------------------8
11.मूलप्रकृतिस्थितिविभक्ति ---8-190
1.24 अनुयोगद्वार ---8-95
1. अद्धाच्छेद--8-14
2. उत्कृष्ट अद्धाच्छेद ---9-11
3. जघन्य अद्धाच्छेद---12-14
4. सर्व-नोसर्वविभक्ति--14
5. उत्कृष्ट-अनुत्कृष्टवि. ---14
6. जघन्य-अजघन्यवि. --14
7. सर्वस्थिति और अद्धाच्छेदकी उत्कृष्ट स्थितिमें अन्तर कथन ------------------------------14-15
8. उत्कृष्ट विभक्ति और उत्कृष्ट अद्धाच्छेदमें अन्तर कथन -----------------------------------15
9. सर्वविभक्ति और उत्कृष्ट विभक्तिमें अन्तर कथन ---15
10.सादि-अनादि-ध्रुव-अध्रुववि. ---15-16
11.स्वामित्व ---16-25
12.उत्कृष्ट स्वामित्व--16-20
13.जघन्य स्वामित्व ---20-25
14.काल ---25-47
15.उत्कृष्ट काल--25-36
16.जघन्य काल ---37-47
17.मूलोच्चारणा पाठका निर्देश--40

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

18.अन्तरानुगम ----------47-53
19.उत्कृष्ट अन्तरानुगम----------47-50
20.जघन्य अन्तरानुगम ----------51-53
21.नाना जीवोंकी अपेक्षा भङ्गविचय ----------54-57
22.उत्कृष्ट भङ्गविचय ----------54-55
23.जघन्य भङ्गविचय----------56-57
24.भागाभागानुगम----------58-59
25.जघन्य भागाभागानुगम----------59-60
26.परिमाणानुगम ----------61-63
27.उत्कृष्ट परिमाणानुगम----------61-62
28.जघन्य परिमाणानुगम----------62-63
29.क्षेत्रानुगम ----------64-65
30.उत्कृष्ट क्षेत्रानुगम----------64-65
31.जघन्य क्षेत्रानुगम ----------66-67
32.स्पर्शानानुगम ----------68-80
33.उत्कृष्ट स्पर्शनानुगम ----------68-77
34.जघन्य स्पर्शनानुगम----------77-80
35.कालानुगम ----------80-86
36.उत्कृष्ट कालानुगम----------80-82
37.जघन्य कालानुगम ----------83-86
38.अन्तरानुगम ----------88-92
39.उत्कृष्ट अन्तरानुगम----------88-89
40.जघन्य अन्तरानुगम ----------90-92
41.भावानुगम----------93
42.अल्पबहुत्वानुगम ----------93-95
43.उत्कृष्ट अल्पबहुत्वानुगम----------93-94
44.जघन्य अल्पबहुत्वानुगम ----------94-95
45.भुजगारके 13 अनुयोगद्वार ----------95-127
46.समुत्कीर्तनानुगम----------95-96
47.स्वामित्वानुगम ----------96-97
48.कालानुगम ----------98-108
49.अन्तरानुगम ---------- 108-111
50.नाना जीवोंकी अपेक्षा भङ्ग विचय---------- 111-113
51.भागाभागानुगम---------- 113-114
52.परिमाणानुगम ---------- 114-115

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

53.क्षेत्रानुगम ---------- 116-117
54.स्पर्शनानुगम ---------- 117-120
55.कालानुगम ---------- 121-122
56.अन्तरानुगम ---------- 123-125
57.भावानुगम ---------- 126
58.अल्पबहुत्वानुगम ---------- 126-127
59.पदनिक्षेपके 3 अनुयोगद्वार ---------- 127-135
60.समुत्कीर्तना ---------- 127-128
61.उत्कृष्ट समुत्कीर्तना ---------- 127-128
62.जघन्य समुत्कीर्तना ---------- 128
63.स्वामित्वानुगम ---------- 129
64.उत्कृष्ट स्वामित्वानुगम ---------- 129-133
65.जघन्य स्वामित्वानुगम ---------- 133-134
66.अल्पबहुत्व ---------- 134-135
67.उत्कृष्ट अल्पबहुत्व ---------- 134-135
68.जघन्य अल्पबहुत्व ---------- 135
69.वृद्धिके 13 अनुयोगद्वार ---------- 136-189
70.समुत्कीर्तना ---------- 136-137
71.स्वामित्वानुगम ---------- 138-141
72.कालानुगम ---------- 141-149
73.अन्तरानुगम ---------- 149-160
74.नाना जीवोंकी अपेक्षा भङ्गविचय ---------- 160-164
75.भागाभागानुगम ---------- 164-166
76.परिमाणानुगम ---------- 166-168
77.क्षेत्रानुगम ---------- 168-169
78.स्पर्शनानुगम ---------- 169-175
79.कालानुगम ---------- 175-180
80.अन्तरानुगम ---------- 180-185
81.भावानुगम ---------- 185
82.अल्पबहुत्वानुगम ---------- 185-189
83.स्थानप्ररूपणा ---------- 189-190
12.उत्तरप्रकृतिस्थितिविभक्ति ---------- 191-544
1. अर्थपद और उसकी व्याख्या ---------- 191-192
2. स्थिति पदकी व्याख्या ---------- 192
3. उत्तरप्रकृति पदकी व्याख्या ---------- 192

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

4. चौबीस अनुयोग द्वार ---------- 193-544
1. अनुयोगद्वारोंका नाम निर्देश ---------- 193
2. भुजगार आदि अनुयोगद्वारोंका 24 अनुयोगद्वारोंमें अन्तर्भाव ---------- 193
3. अद्धाच्छेद ---------- 194-214
4. उत्कृष्ट स्थिति अद्धाच्छेद ---------- 194-195
5. सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थिति ---------- 195-196
6. सोलह कषायोंकी उत्कृष्ट स्थिति ---------- 197
7. नौ नोकषायोंकी उत्कृष्ट स्थिति ---------- 197-198
8. चारों गतियोंमें सब कर्मोंकी उत्कृष्ट स्थिति ---------- 199
9. 14 मार्गणाओंमें उच्चारणाके अनुसार उत्कृष्ट स्थिति ---------- 199-202
10. जघन्य स्थिति अद्धाच्छेद ---------- 202-214
1. मिथ्यात्व, सम्यग्मिथ्यात्व और बारह कषायोंकी जघन्य स्थिति ---------- 203-205
2. सम्यक्त्व, लोभसंज्वलन, स्त्रीवेद और नपुंसकवेदकी जघन्य स्थिति ---------- 205-207
3. क्रोधसंज्वलनकी जघन्य स्थिति ---------- 207-208
4. मानसंज्वलनकी जघन्य स्थिति ---------- 208-209
5. मायासंज्वलनकी जघन्य स्थिति ---------- 209
6. पुरुषवेदकी जघन्य स्थिति ---------- 209-210
7. छह नोकषायोंकी जघन्य स्थिति ---------- 210
8. गतियोंमें जघन्य स्थिति जानने की सूचना ---------- 211
11. 14 मार्गणाओंमें उच्चारणाके अनुसार जघन्य स्थिति ---------- 211-225
1. उच्चारणाके अनुसार नोकषायोंके बन्धक कालका अल्पबहुत्व ---------- 213
2. इस विषयमें व्याख्यानाचार्यका अभिप्राय ---------- 213-214
12. सर्व-नोसर्वस्थितिविभक्ति ---------- 226
13. उत्कृष्ट-अनुत्कृष्टस्थिति. ---------- 226
14. जघन्य-अजघन्यस्थिति. ---------- 226-227
15. सादि-अनादि-ध्रुव-अध्रुवस्थि. ---------- 227-228
16. एक जीवकी अपेक्षा स्वामित्व ---------- 229-266
1. उत्कृष्ट स्थितिका स्वामित्व ---------- 229-241
2. मिथ्यात्व ---------- 229-230
3. सोलह कषाय ---------- 230
4. सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्व ---------- 231-232
5. नौ नोकषाय ---------- 233-234
6. 14 मार्गणाओंमें उच्चारणाके अनुसार स्वामित्व ---------- 234-241
17. जघन्य स्थितिका स्वामित्व ---------- 241-266
1. मिथ्यात्व ---------- 241-242

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

2. सम्यक्त्व ---------- 243
3. सम्यग्मिथ्यात्व ---------- 244
4. अनन्तानुबन्धी चार ---------- 245-247
5. मध्यकी आठ कषाय ---------- 248-250
6. मान और माया संज्वलन---------- 250
7. लोभ संज्वलन ---------- 251
8. स्त्रीवेद---------- 251-252
9. पुरुषवेद ---------- 252-253
10. नपुंसकवेद ---------- 253
11. छह नोकषाय---------- 253-254
12. नारकियोंमें जघन्य स्वामित्व---------- 254-258
13. शेष गतियोंमें जघन्य स्वामित्व---------- 258
14. शेष मार्गणाओंमें उच्चारणाके अनुसार जघन्य स्वामित्व ---------- 258-266
18. काल ---------- 266-315
1. उत्कृष्ट स्थितिविभक्तिका काल ---------- 267-290
2. मिथ्यात्व ---------- 267-268
3. सोलह कषाय---------- 268-269
4. नपुंसकवेद, अरति, शोक, भय और जुगुप्सा---------- 269
5. सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्व ---------- 270
6. स्त्रीवेद, पुरुषवेद, हास्य और रति ---------- 270-271
7. चार गतियोंमें ---------- 272
8. उच्चारणाके अनुसार काल ---------- 272-290
9. जघन्य स्थितिका काल ---------- 290-315
10. मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, सम्यग्मिथ्यात्व, सोलह कषाय और तीन वेद---------- 290-291
11. छह नोकषाय---------- 291-292
12. जघन्य स्थिति और जघन्य अद्धाच्छेद तथा उत्कृष्ट स्थिति और उत्कृष्ट अद्धाच्छेदका विचार---------- 291-292
13. उच्चारणाके अनुसार जघन्य स्थितिका काल ---------- 292-315
19. अन्तर ---------- 316-345
1. उत्कृष्ट स्थितिका अन्तर ---------- 316-330
2. मिथ्यात्व और 16 कषाय ---------- 316-317
3. नौ नोकषाय---------- 317-318
4. सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्व ---------- 318-319
5. उच्चारणाके अनुसार उत्कृष्ट स्थितिका अन्तर---------- 319-330
6. जघन्य स्थितिका अन्तर ---------- 332-345

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

7. मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, बारह कषाय और नौ नोकषाय ---------- 331
8. सम्यग्मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी चार---------- 331-332
9. उच्चारणाके अनुसार जघन्य स्थितिका अन्तर ---------- 332-345
10. नाना जीवोंकी अपेक्षा भङ्गविचय अर्थपद ---------- 345-346
20. उतकृष्ट स्थितिका भङ्गविचय---------- 346-349
1. मिथ्यात्वकी अपेक्षा भङ्गविचय---------- 346-348
2. शेष प्रकृतियोंकी अपेक्षा भङ्गविचय ---------- 348
3. उच्चारणा के अनुसार भङ्गविचय ---------- 348-349
21. जघन्य स्थितिका भङ्गविचय---------- 349-353
1. अर्थपद---------- 350
2. मिथ्यात्वकी अपेक्षा भङ्गविचय---------- 350-351
3. शेष प्रकृतियोंकी अपेक्षा भङ्गविचय ---------- 351
4. उच्चारणाके अनुसार भङ्गविचय---------- 351-353
22. भागाभागानुगम---------- 354-357
23. उत्कृष्ट भागाभागानुगम ---------- 354-355
24. जघन्य भागाभागानुगम---------- 356-357
25. परिमाणानुगम ---------- 358-363
1. उत्कृष्ट परिमाणानुगम---------- 358-359
2. जघन्य परिमाणानुगम ---------- 360-363
26. क्षेत्रानुगम ---------- 364-367
27. उत्कृष्ट क्षेत्रानुगम---------- 364
28. जघन्य क्षेत्रानुगम ---------- 365-367
29. स्पर्शनानुगम---------- 368-387
30. उत्कृष्ट स्पर्शनानुगम ---------- 368-378
1. ओघसे स्त्रीवेद और पुरुषवेदमें स्पर्शनके मतभेदका निर्देश ---------- 368
31. जघन्य स्पर्शनानुगम---------- 379-387
1. तिर्यञ्चोंमें कुछ प्रकृतियोंकी अपेक्षा स्पर्शनमें पाठभेद---------- 380
32. नाना जीवोंकी अपेक्षा काल---------- 387-406
1. उत्कृष्ट काल---------- 387-394
2. सम्यक्त्व और सम्यग्मिथ्यात्वके उत्कृष्ट कालका स्वतन्त्र निर्देश---------- 387-389
3. उच्चारणाके अनुसार उत्कृष्ट काल---------- 389-394
4. जघन्यकाल---------- 394-406
5. मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, बारह कषाय और तीन वेद ---------- 394-395
6. सम्यग्मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी चार---------- 395-396
7. छह नोकषाय---------- 396

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

8. उच्चारणाके अनुसार जघन्य काल ---------- 396
9. चूर्णिसूत्र, वप्पदेवकी उच्चारणा और वीरसेन द्वारा लिखित उच्चारणामें पाठभेदका निर्देश398-406
33. नाना जीवोंकी अपेक्षा अन्तर ---------- 406-424
1. उत्कृष्ट अन्तर ---------- 406-410
2. सब प्रकृतियोंका उत्कृष्ट अन्तर ---------- 406-407
3. उच्चारणाके अनुसार उत्कृष्ट अन्तर ---------- 407-410
4. जघन्य अन्तर ---------- 410-424
5. मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, आठ कषाय और छह नोकषाय ---------- 410-411
6. सम्यग्मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी चार ---------- 411
7. तीन संज्वलन और पुरुषवेद ---------- 412-413
8. लोभसंज्वलन ---------- 413
9. स्त्रीवेद और नपुंसकवेद ---------- 413-414
10. नरकगतिमें सब प्रकृतियोंके अन्तर का विचार ---------- 415
11. उच्चारणाके अनुसार जघन्य अन्तर ---------- 415-424
34. भावानुगम ---------- 424-425
1. उत्कृष्ट भावानुगम ---------- 424
2. उपशान्तकषाय गुणस्थानमें सब प्रकृतियोंका औदयिक भाव कैसे बनता है इस शंकाका परिहार ---------- 424
3. जघन्य भावानुगम ---------- 424-425
35. सन्निकर्ष ---------- 425-524
1. उत्कृष्ट सन्निकर्ष ---------- 425-494
2. मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिका आलम्बन लेकर सन्निकर्ष विचार ---------- 425-454
3. सम्यक्त्वकी उत्कृष्ट स्थितिका आलम्बन लेकर सन्निकर्ष विचार ---------- 455-458
4. सम्यग्मिथ्यात्वकी उत्कृष्ट स्थितिका अवलम्बन लेकर सन्निकर्ष विचार -------- 458-459
5. सोलह कषायोंकी उत्कृष्ट स्थितिका आलम्बन लेकर सन्निकर्ष विचार ---------- 459
6. स्त्रीवेदकी उत्कृष्ट स्थितिका आलम्बन लेकर सन्निकर्ष विचार ---------- 459-472
7. शेष प्रकृतियोंकी अर्थात् हास्य, रति, और पुरुषवेदकी उत्कृष्ट स्थितिका आलम्बन लेकर सन्निकर्ष विचार ---------- 472-475
8. मतभेदका उल्लेख ---------- 474
9. नपुसंकवेदकी उत्कृष्ट स्थितिका आलम्बन लेकर सन्निकर्षका निर्देश ---------- 476-482
10. अरति, शोक, भय और जुगुप्साकी उत्कृष्ट स्थितिका आलम्बन लेकर सन्निकर्षका निर्देश ---------- 482-485
11. उच्चारणाके अनुसार उत्कृष्ट सन्निकर्ष ---------- 485-494
12. जघन्य सन्निकर्ष ---------- 494-524
13. मिथ्यात्वकी जघन्य स्थितिका आलम्बन लेकर सन्निकर्ष विचार ---------- 494

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

14. शेष प्रकृतियोंकी जघन्य स्थितिका आलम्बन लेकर सन्निकर्ष विचार---------- 495
15. उच्चारणाके अनुसार जघन्य सन्निकर्ष---------- 495-524
36.अल्पबहुत्व ---------- 524-544
1. स्थिति अल्पबहुत्व---------- 524-542
2. उत्कृष्ट स्थिति अल्पबहुत्व ---------- 524-530
3. नौ नोकषाय---------- 524-525
4. सोलह कषाय---------- 525
5. सम्यग्मिथ्यात्व ---------- 525
6. चूर्णीसूत्र और उच्चारणाका आलम्बन लेकर कालप्रधान और निषेकप्रधान स्थितिका उदाहरण सहित निर्देश ---------- 525-526
7. मिथ्यात्व ---------- 526
8. नरकगतिमें सब प्रकृतियोंके अल्पबहुत्व का विचार---------- 526-527
9. उच्चारणाके अनुसार उत्कृष्ट स्थिति अल्पबहुत्व---------- 528-530
10.उच्चारणाके अनुसार जघन्य स्थिति अल्पबहुत्व ---------- 530-542
11.उच्चारणाके अनुसार बन्धक कालकी अपेक्षा संदृष्ट सहित सब प्रकृतियोंके अल्पबहुत्वका निर्देश---------- 531-532
12.चिरन्तन व्याख्यानाचार्यके द्वारा निर्दिष्ट अल्पबहुत्व---------- 532-533
13.दोनों अल्पबहुत्वोंमें मतभेदका उल्लेख ---------- 533
14.तिर्यञ्चगतिमें उक्त दोनों अल्पबहुत्वोंकी अपेक्षा पुनः विचार---------- 535
15.जीव अल्पबहुत्व ---------- 542-544
16.उत्कृष्ट जीव अल्पबहुत्व---------- 542-543
17.जघन्य जीव अल्पबहुत्व ---------- 543-544

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org